RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

डॉ0 अम्बेडकर का समता दर्शन

डॉ. प्रभा शर्मा

सहआचार्य– हिंदी विभाग राजकीय कला कन्या महाविद्यालय कोटा (राजस्थान)

कभी–कभी समाज की प्राचीनता के साथ रूढ़ियाँ उस समाज की गति को अवरूद्ध कर देती हैं। उसके तरूणों की धमनियों को रक्त जमा हुआ दिखता है। लोग निराशा और हताशा में जीवन जीते रहते हैं। किसी की आंखों में कोई स्वप्न दिखलाई नहीं पड़ता। उस समय कोई व्यक्ति अपनी अकल्पनीय संघर्ष शक्ति से उस समाज को झकझोर कर उठाता है, आगे बढ़ने की समार्थ्य उत्पन्न करता है। धीरे–धीरे समाज स्वयं अपनी समार्थ्य पहचानता है और उस व्यक्ति के कृतित्व से प्रेरणा ग्रहण करता हुआ आगेबढ़ता जाता है।ऐसे ही व्यक्ति को महापुरूष कहते हैं।ऐसे महापुरूष डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जी उस उल्कापिंड के समान थे जिसकी चमक वर्षों पूर्व ओझल हो जाने के बाद आज भी हमें आलोकित कर रही है। उनके विचार और आदर्श पूरे ओज के साथ आज भी प्रासंगिकएवं समयानुकूल हैं। वे न केवल अपने युग की आत्मा को प्रतिबिम्बित करते हैं अपितु उनकी दृष्टि भारत के भविष्य और सारी मानवता के कल्याण की खोज करती है।

डॉ0 अम्बेडकर ने अपने व्यक्तिगत जीवन की सभी महत्वाकांक्षाओं को ठोकर मारकर अपने दुःखी और पीड़ित, अपमानित जनों के जीवन में जागृति और प्रकाश लाने तथा जातिवाद की विसंगतियों केप्रति जागृत करने और उनमें उत्साह एंव स्फूर्ति लाने के लक्ष्य को अपने जीवन का ध्येय बना लिया तथा इस चिरंजीवी राष्ट्र के नव निर्माण को ही अपना साध्य समझा।

डॉ0 अम्बेडकर का जन्म उन परिस्थितियों में हुआ था जब एक तरफ यूरोप में स्वतन्त्रता व समानता का विचार फल–फूल रहा था और उधर भारतीय समाज में अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विस्तारवादी पंजे में जकड़े हुये लोगों में स्वतन्त्रता और समानता की भावना जागृत होनी आरम्भ हो गई थी। उस समय विश्व की जनसंख्या का एक बड़ा भाग ''नीग्रो व हब्शी'' के रूप मेंमानवीय घृणा का शिकार था। दूसरी ओर भारत में भी वर्णभेद व जाति–पांति की दीवारें मजबूत थीं। यहां समाज के अपने ही सहधर्मी स्वेदशी बनधुओं के प्रति घृणा की भावना तेज हो रही थी जिससे देश में एक वर्ग विशेष का जीवन –यापन दुर्लभ हो गया था।

बाबा साहब गरीबी में पले, उपेक्षाओं के बावजूद पढ़े और विरोध के होते हुए भी बढ़ते गये। उनका जन्म उस समय अस्पृश्य कही जाने वाली ''महार'' जाति में हुआ था। गरीबऔर पिछड़े हिन्दुओं की सेवा में ही उनका अधिकांश समय लगा परन्तु उनका चिन्तन राष्ट्रहित पर ही आधारित था। उनका मानना था कि प्रत्येक विषय की कसौटी राष्ट्रहित ही हो सकती है। समग्र समाज का उत्थान किये बिना राष्ट्र का विकास सम्भव नहीं, इस कारण वे समाज के अन्तिम छोर पर खड़े उस दीनहीन दरिद्रनारायण के कष्ट को समझते हुये राष्ट्र की उन्नति में उसकी भागीदारी के प्रति पूर्ण सचेष्ट थे।

डॉ0 अम्बेडकरकी जीवन यात्रा एक दुर्दम्य योद्धा की यात्रा है जो अभाव, उपेक्षा, घृणा, अस्पृश्यता, निंदा तथा घोर विरोध के मुख पर अपने अडिग अविचलित चरण रखते हुये निरन्तर गतिमान दिखती है। अपने प्रत्येक पग में वे अपमान एवंबहिष्कार को ध्वस्त करते दिखलाई पड़ते हैं। उनका जीवन–प्रवाह घृणा और तिरस्कार के पशुवत् जीवन को ही अपनी नियति समझ रहे ऐसे करोड़ों लोगों के लिए पवित्र गंगा की तरह परम शान्ति देने वाला है। अनेक विषयों का पारंगत, विलक्षण प्रतिभा का धनी, संघर्ष की बेजोड़ समता वाला यह महान व्यक्तित्व समय की परिस्थितियों में से स्वस्फूर्त महानायक की तरह कुरूक्षेत्र में अकेला ही खड़ा हो गया और अपनी प्रचण्ड ध्वनि में हुँकारा – ''बस। अब सारे अन्याय, अत्याचार और असमानता का युग समाप्त होना चाहिए। यह और अधिक नहीं चल सकता।''[1]

समरसता के इस भगीरथ और दलितों के मसीहा का जन्म 14 अप्रैल सन् 1891 को उस समय अस्पृश्य कहे जाने वाले एक अत्यन्त निर्धन परिवार में हुआ था उस समय की सामाजिक दुस्वथा में इस देश में कुछ ऐसे भी लोग थे जिनके दिखलाई देने पर भी प्रतिबन्ध था अर्थात् दिन के समय उनका बाजारों तथा नगरों में निकलना वर्जित था। अनेक प्रकार के सामाजिक, धार्मिक प्रतिबन्ध उनपर लगे हुये थे। महाराष्ट्र में 'महार' जाति के लोग बड़ी संख्या में निवास करते हैं। वे बड़े परिश्रमी और पुरूषार्थी होते हैं। शिवाजी महाराज की सेवा में लड़कर कई बार उन्होंने अपना पराक्रम दिखलाया था। कहते हैं, महाराष्ट्र शब्द की उत्पत्ति के पीछे यह 'महार' नाम ही है। डॉ0 अम्बेडकर के पूर्वजों का मूल गांव रत्नागिरि जिले के मण्डन गढ़ कस्बे से लगभग आठ किलोमीटर दूर 'अम्बावड़े' था। उनके पूर्वज अपने ग्राम में होने वाले धार्मिक आयोजनों, उत्सवों के समय देव प्रतिमाओं की पालकियां उठाने का काम किया करते थे। यह काम उनके परिवार के ग्राम में प्राप्त सम्मान का प्रतीक था। इनके परिवार के सभी सदस्य कबीरंपथी थे, अतः अस्पृश्यता में उनका बिल्कुल विश्वास नहीं था। वे संत कबीर के इस कथन ''जाति–पांति पूछे नहीं

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

कोई, हरि को भजे सो हरि का होई'' में दृढ़ विश्वास रखते थे। बाबा साहब के दादा मालो जी सकपाल अपने मूल गांव के कारण ''आम्बावेडकर'' इस उपनाम से जाने जाते थे। मालो जी के एक पुत्र थे– श्री राम जी सकपाल और एक पुत्री थी –मीरा

रामजी सकपाल की चौदह सन्तानों में सबसे छोटा बालक ही आगे चलकर भीमराव अम्बेडकर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बाबा साहब को 'अम्बेडकर' उपनाम उनके ब्राह्मण अध्यापक द्वारा दिया गया है। पूरे परिवारकी अपनी ईमानदारी, धार्मिकता एवं असत्य के विरूद्ध संघर्ष करने के लिए दूर - दूर तक बड़ी प्रसिद्धि थी। राम जी सकपाल अत्यन्त परिश्रमी और धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति थे। सैकड़ों भजन उनको कंठस्थ थे, प्रातः एवं सायंकाल बच्चों के साथ प्रार्थना का उनका अखण्ड नियम था। भजन सुनाना एवं उन्हें बच्चों को कंठस्थ कराना, इन सभी बातों का बच्चों की भावना और प्रतिभा के विकास पर बड़ा अच्छा परिणाम हुआ।

देखते ही देखते भीम को मराठी भाषा के अनेक भजन याद हो गये। मराठी भाषा पर उनका अधिकार बढ़ता गया। भजन गाते–गाते उनका संकोच भी दूर हुआ और बोलने की कला और अधिक विकसित होती गई। छोटी आयु में ही उनके अन्दर विलक्षण गुण प्रकट हाने लगे। भीम के पिता अध्यापक होने के कारण बच्चों को मराठी शब्दों के प्रयोग के साथ–साथ अंग्रेजी, गणित, आदि विषयों को भी स्वयंही पढ़ाते थे। ऐसे धार्मिक और स्वाभिमानी परिवार का संस्कार भीम पर बचपन से ही पड़ा। बचपन के धार्मिक संस्कारों के कारण ही वे जीवन भर निष्कपट, दृढ़विश्वासी, दीन–दुःखियों के प्रति सहृदय एवं अहंकार से मुक्त रहे। धर्म की कुरीतियों की उन्होंने आलोचना की परन्तु धर्म के मूल तत्वों से उनका विश्वास कभी नहीं डिगा। भीमराव ने अपने उदाहरण से यह बात सिद्ध कर दी कि परिवार के वातावरण का संस्कार बच्चों के जीवन के निर्माण में बहुत सहयोगी होता है।

डॉ0 अम्बेडकर ज्ञान के अथाह सागर थे, वे उच्चतम विद्या से विभूषित थे। उन्होंनेकोलम्बियां विश्वविद्यालय, न्यूयार्क से एम0ए0, पीएच0डी0, लंदन विश्वविद्यालय से एम0एससी, डी0एससी0, तथा ग्रेज–इन से बार–एट–लॉ की उपाधियां प्राप्त कर बौद्धिक दृष्टि से भारत के अग्रगण्य विद्वानों की श्रेणी में स्वयं को स्थापित कर लिया था।''[2]

सन् 1920 में डॉ0 अम्बेडकर ने 'मूक नायक' समाचार पत्र प्रारम्भ किया, इसके नाम से ही पता चलता था कि यह जो बोल नहीं सकते उनकी वाणी है। डॉ0 अम्बेडकर स्वयं शक्तिहीनों की आवाज थे। डॉ0 अम्बेडकर ने इस पत्र के माध्यम से हिन्दू समाज के अन्दर व्याप्त कुरीतियों, बुराइयों और पाखण्ड को दूर करने का प्रयत्न किया। उन्होंने कहा कि ''दलितों के पिछड़ा होने के कारण उनकी अशिक्षा तथा असंगठन ही है। दलितों को उनकी पराधीनता, गरीबी तथा अज्ञानता से बाहर निकालना है तो लम्बे अथक प्रयासों की आवश्यकता होगी।'' [3]

डॉ0 अम्बेडकर का मत था कि समाज में न्याय की स्थापना जब तक नहीं हो सकती तब तक किहम राजनैतिक समानता के साथ–साथ आर्थिक समानता प्राप्त नहीं कर लेते हैं। उनका मत था कि अद्दूत, भूमिहीन मजदूरों की समस्या को राष्ट्रीय आर्थिक विकास के सन्दर्भ में देखा जाना चाहिये। सन् 1936 में लेबर पार्टी की स्थापना करते समय डॉ0 अम्बेडकरने अपना परम ध्येय भूमिहीन मजदूरों, गरीब किसानों व श्रमिक वर्ग की समस्याओं का समाधान करके उनके लिए ''सामाजिक न्याय'' उपलब्ध कराना था। तभी तो उन्होंने कहा था कि –''समानता का अर्थ है सभी को समान अवसर मिले और प्रतिभा को ही प्रोत्साहन दिया जाये। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हिन्दू समाज का गठन दो सिद्धान्तों पर किया जाए, समानता व जाति विहीनता।'' [4]

सामाजिक असमानता या अन्याय का जो विवरण डॉ0 अम्बेडकर ने दिया है उसको समझे बिना 'सामाजिक न्याय'अथवा 'सामाजिक समरसता' का अध्याय अधूरा ही होगा क्योंकि अपने आपको सभ्य व सुशिक्षितकहने वाले हिन्दू समाज की जो आन्तरिक स्थिति है इसका अध्ययन कियेबिना 'सामाजिक समरसता' के महत्व को समझ पाना कठिन है। इस सन्दर्भ में डॉ0 अम्बेडकर ने कहा कि ''देश के अन्दर एक ऐसा वर्ग भी है जो सदियों से असमानता के दर्दनाक उत्पीड़न को झेलता आ रहा है, जो विदेशियों के साथ–साथ स्वदेशियों का भी गुलाम है।''[5]

''आदमियों की दुनिया में भी जिसके साथ पशुवत् व्यवहार किया जाता है। सभी हिन्दू कुत्ते, बिल्लियों, गाय इत्यादि पालतू जानवरों को बड़े प्यार से स्पर्श करते हैं, चींटी को शक्कर अर्पित की जा सकती है। इसमें कोई बुराई नहीं है, लेकिन अपने ही स्वधर्मी इन दलितों के स्पर्श से वे अपवित्र हो जाते हैं।'' [6]

हिन्दू धर्म की कुरीतियों से बैचेन बाबा साहबकी भारतीयता पर गहरी आस्था है, उनका कहना है –''मुझे अच्छा नहीं लगता जब कुछ लोग कहते हैं किहम पहले भारतीय हैं और बाद में हिन्दू अथवा मुसलमान। मुझे यह स्वीकार नहीं है। धर्म, संस्कृति, भाषा आदि की प्रतिस्पर्धी निष्ठा के रहते हुये भारतीयता के प्रति निष्ठा नहीं पनप सकती। मैं चाहता हूं कि हम पहले भी भारतीय हों और अंत तक भारतीय रहें, भारतीय के अलावा कुछ नहीं।''[7]

सामाजिक समरसता के लिए डॉ0 अम्बेडकर दृढ़ संकल्पित थे। इसके लिए उन्होंने जो स्मृति पत्र लिखा था, वह इस प्रकार था जिसमें डॉ0 अम्बेडकर ने अल्पसंख्यकों के अधिकार तथा राज्य के कर्तव्यों के विषय में एक 22 सूत्रीय स्मरण पत्र लिखा था। इसे ''मैंगनाकार्टा ऑफ द हैव नाट्स''कहा जाता है। इस पत्र की प्रस्तावना में स्पष्ट लिखा था कि ''स्वतन्त्र भारत देशी रियासतों को साथ लेकर बने और उसका नाम ''यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ इण्डिया'' पड़े। इसमें नागरिकों को जीवन, स्वाधीनता, अभिव्यक्ति

और धार्मिक स्वतन्त्रता की गारन्टी हो। जिसमें दलित वर्ग को विशेष अवसर प्रदान कर सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक विषमता समाप्त की जाए।''[8]

ताकि ''सदियों से यह शोषित, अपेक्षित व उत्पीड़ित वर्ग अभाव और भय से मुक्ति पा सके। इसके लिए जरूरी है कि विकास एंव सामाजिक न्याय की शुरूआत गरीब के आंगन से हो और वहीं से उपर उठे, जिससे दलित, शोषित, उत्पीड़ित जनता को सुकून का अहसास पहले हो, बाद में किसी अन्य को।''[9]

डॉ0 अम्बेडकर का विचार था कि ''अपमानित होकर जीवित रहना धिक्कार है, जीवन को स्वामिभमान से व्यतीत करना चाहिये और स्वाभिमान के साथ जीवित रहने के लिए मनुष्य को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसलिए युवकों को कठिन एवं तीव्र संघर्ष से ही शक्ति, विश्वास व आदर प्राप्त करना चाहिये जिससे उनका शोषित समाज मजबूत बन सके और सम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत कर सके।[10]

अम्बेडकर जी सामाजिक क्रान्ति के पुजारी थे। वे आध्यात्मिक तथा भौतिक मूल्यों के समन्वय में समाज व व्यक्ति का हित मानते थें, उन्होंने कहा था –''मेरी दृढ़ प्रतिज्ञा है कि मैं पददलितों की सेवा एवं हित में मरूँ, जिनके बीच मेरा जन्म हुआ, पालन–पोषण हुआ और रह रहा हूँ। मैं अपने इस कार्य में एक इंच भी इधर–उधर नहीं हटूँगा अथवा निन्दकों द्वारा उग्र निरूत्साहित आलोचना की तनिक भी परवाह नहीं करूंगा।''[11]

डॉ0 अम्बेडकर प्रखर राष्ट्रवादी थे। उनके अनुसार किसी राष्ट्र के निर्माण के लिए भूमि, वहाँ का समाज तथा समाज की एक श्रेष्ठ परम्परा, यह तीनों अनिवार्य अंग हैं। राष्ट्र केवल भौतिक ईकाई नहीं है। उन्हीं के शब्दों में –''राष्ट्र एक जीवित आत्मा है, यह एक आत्मिक सिद्धान्त है। इसके लिए आवश्यक है स्मृतियों की बहुमूल्य विरासत का सामान्य अधिकार तथा वर्तमान काल में वास्तविक सहमति। एक साथ रहने की इच्छातथा अविभाजित विरासत, जो हमारे पूर्वजों ने हमकोसौंपी है, उसे कायम रखने की प्रबल इच्छा का होना, नितान्त आवश्यक है। एक व्यक्ति की भांति राष्ट्र भूतकालीन लोगों द्वारा किए गए सतत् प्रयत्न,त्याग और देशभक्ति का परिणाम है। इन पुरूषों की अराधना एक न्याययुक्त बात है। क्योंकि इन्हीं पुरूषों ने हमें बनाया है। वीरतापूर्ण भूतकाल, श्रेष्ठ पूर्वज और उनकी महान यश गाथाएं हमारी सामाजिक पूंजी के ढाँचे का निर्माण करती हैं,जिस पर हम अपने राष्ट्र की रचना कर सकते हैं। एक राष्ट्र की रचना में भूतकालीन यश, वर्तमानकालीन सम्मिलित इच्छा, भूतकाल में एक साथ महान कार्य करने के अवसर और भविष्य में भी पुनः महान कार्य करने की प्रबल आकांक्षा पूर्णरूपेण गर्भित है। इसके लिए हमने जो त्याग और कठिनाइयाँझेली हैं, उनके प्रति हमारा अटूट अनुराग और उत्तराधिकारियों को उन्हें सौंप देने की प्रबल इच्छा ही एक राष्ट्र की रचना करती है।''[12]

केवल भूमि से हीराष्ट्र निर्माण नहीं होते वरन् वहां पर खड़े रहने वाला समाज इसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। इस विषय में वे रेनन का उदाहरण देते हैं– ''भूमि नहीं, वहाँ का समाज ही राष्ट्र का निर्माण करता है। भूमि तो केवल आधार प्रदान करती है। समाज राष्ट्र की आत्मा है, अर्थात् पवित्र राष्ट्र के निर्माण में व्यक्ति ही सब कुछ है।'' [13]

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में वहां के समाज का, राष्ट्र के सम्बन्ध में सुख–दुःख, यश–अपयश के प्रति विचार एक ही जैसा होना चाहिये। जिस समाज कीराष्ट्र के प्रति ऐसी भावना होती है, वही समाज राष्ट्र का निर्माण करता है। राष्ट्र की पहचान बताते हुये बाबा साहब ने कहा है –''भूतकालीन यश, समान रूप से सुख–दुःख और आशा में हिस्सा बंटाना आदि बातें एक राष्ट्र का घोतक हैं। एक साथ मिलकर कष्ट उठाना आनन्द की स्मृतियों की तुलना में एकता के लिए अधिक महत्व का आधार है। राष्ट्रीय महत्व की स्मृतियाँ तथा ऐसी ही दुःखद घटनाओं के उदाहरण विजय की तुलना में अधिक मूल्यवान हैं क्योंकि इससे कर्तव्य बोध जागृत होता है और सामूहिक प्रयत्नों की आवश्यकता अनुभव होती है। उनके अनुसार –'' आदर्श समाज वह है जिसमें समता, स्वतन्त्रता व भ्रातृ–भाव का समन्वय हो।''[14]

डॉ0 अम्बेडकर ने सम्पूर्ण भारतवर्ष को एक राष्ट्र के रूप में स्वीकार किया। उनका मानना था कि मनुष्य के अन्दर भाषा के अतिरिक्त कोई और महत्वपूर्ण तत्व है जो राष्ट्र को एक बनाये रखता है और वह है वहां के लोगों की इच्छा शक्ति। भारत एक राष्ट्र है क्योंकि यहां के समाज में वह इच्छा शक्ति है जिसके आधार पर कोई भी कीमत चुकाकर वह एक राष्ट्र के रूप में अपने आप को बनाये रखना चाहता है। देश की एकता और अखण्डता इसकी स्वाभाविक प्रकृति है। भारत को छोड़कर संसार में कोई भी देश ऐसा नहीं है जिसमें इतनी सांस्कृतिक समरसता हो, क्योंकि इसकी एकता का आधार प्राकृतिक और सांस्कृतिक दोनों ही हैं। श्री एच.वेल्स के शब्दों में –''बिना राष्ट्र और राष्ट्रीयता के वह देश उस व्यक्ति के सदृश है जो भीड़ में बिना वस्त्रोंके नंगा है तथा स्वराज्य प्राप्ति का आधार राष्ट्र ही है। इसलिए हिन्दुओं ने भारत को सदैव एक राष्ट्र की संज्ञा दी।''

डॉ0 अम्बेडकर ने दलितों के उत्थान के लिए जो कुछ भी किया वह सदियों से शोषित व पीड़ित दलितों के लिए एक नये युग का सूत्रपात था। लेकिन आज स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अनेक संवैधानिक संरक्षण दिये जाने के बावजूद भी सामाजिक न्याय के आदर्श की जो कल्पना की गई थी, वह पूरी नहीं हो पा रही है। आज दलितों के नाम पर कुछ सुविधाभोगी लोग तरह–तरह के नारे देकर भेदभाव को खत्म करने के बजाय अलगाववादी भावना को उभारने में लगे हुये हैं। अतः इस अलगाववादी भावना से देश की एकता और अखण्डता को खतरा बढ़ता जा रहा है।

बाबा साहब अम्बेडकर भारत के ऐसे सपूत हैं जिन्होनें केवल अपना ही नहीं, बल्कि अपने परिवार, समाज तथा समूचे देश का नाम ऊँचा किया। अपने जीवन–आदर्शों के कारण वे सबके लिए प्रेरणा और श्रृद्धा के पात्र बन गए। उनके जीवन का प्रभाव केवल उनकी पीढ़ी पर ही नहीं, अपितु उनके बाद की पीढ़ियों पर भी उसका सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है।

गांधी जी ने कहा था कि –''डॉ0 अम्बेडकर ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें कदापि भुलाया नहीं जा सकेगा।''[15]

डॉ0 अम्बेडकर के अथक् प्रयासों का ही परिणाम है कि आज अद्दूतों व दलितों को समानता का अधिकार प्राप्त हो सका है। आज एक अद्दूत, बालक विद्यालयों में सवर्ण बालकों के साथ बैठकर पढ़ सकता है, उनके साथ खाना खा सकता है, उनके साथ उठ–बैठ सकता है। आज अद्दूत तीर्थों, मंदिरों आदि सभी सार्वजनिक स्थानों पर बिना रोक–टोक प्रवेश पा सकते हैं। इसी प्रकार अब उन्हें राजनैतिक क्षेत्र में भी शक्ति और उच्च पदों की प्राप्ति हो रही है। इन सबसे ऊपर सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि अब उनके अन्दर किसी प्रकार की हीनता की भावना नहीं है।

सन्दर्भः–

1. अम्बेडकर राईटिंग एण्ड स्पीच भाग–2, 1982 पृ0 503–509
2. डॉ0 अम्बेडकर, व्यक्तित्व एंव कृतित्व – डॉ0 डी0आर0जाटव, समता साहित्य सदन, 40 मीरा कॉलोनी, इमली वाला फाटक, जयपुर, 302005
3. अम्बेडकर, बी0आर0 –''अनिहेलशन ऑफ कॉस्ट'' पृ0 29–32
4. 'महार' पत्रिका के संभार से
5. भारती के0एस0 ''फाउंडेशन ऑफ अम्बेडकर थॉट'' नई दिल्ली 1990 पृ0 –5
6. कीर, धनंजय ''डॉ0 अम्बेडकर : 'लाइफ एण्ड मिशन' 1981 पृ0 229
7. डॉ0 बाबा साहब अम्बेडकर : राइटिंग्स एण्ड स्पीचिस खण्ड– 2 पृ0 195
8. संसदीय बहस अंक – 7 पृ0– 666
9. डॉ0 अम्बेडकर स्पीच एण्ड राइटिंग भाग – 2 पृ0 505
10. कीर, पृ0 126–128
11. धनंजय कीर : डॉ0 अम्बेडकर लाईफ एण्ड मिशन पृ0 –202
12. अम्बेडकर, बी0आर.भाग –एक (भारत भूषण प्रिटिंग प्रेस, बम्बई 1952) पृ0 1–4
13. वही पृ0 9–10
14. धनंजय कीर, ''डॉ0 अम्बेडकर : लाईफ एण्ड मिशन'', बम्बई 1981 पृ0 81–82
15. महात्मा गांधी 'इंडिया ऑफ माई ड्रीम पृ0 9–10

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)